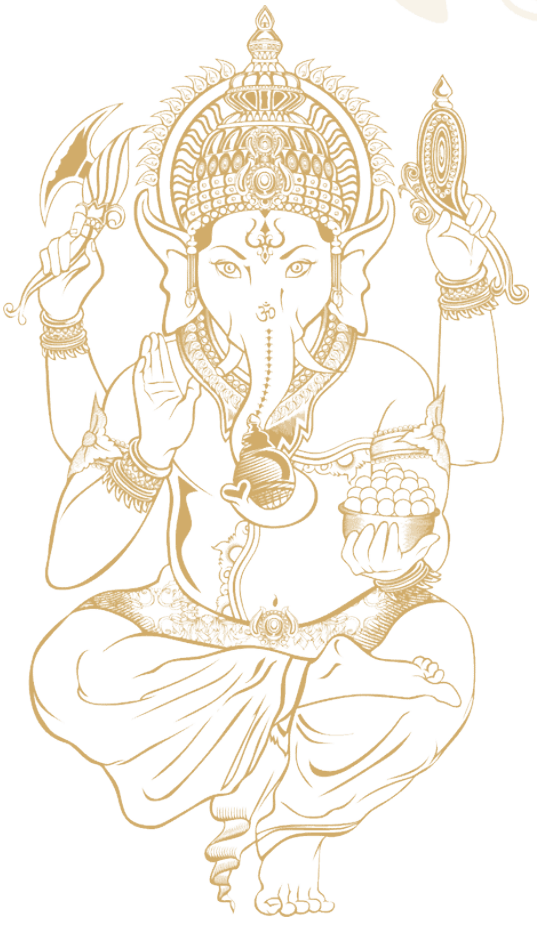

Sandeep

Akansha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121589303

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
1-02/10/1993	जन्म तिथि	06/09/1995
शुक्र-शनिवार	दिन	बुधवार
घंटे 03:25:00	जन्म समय	11:55:00 घंटे
घटी 54:00:03	जन्म समय(घटी)	15:42:47 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Varanasi
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	25:20:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	83:00:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	00:02:00 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:48:58	सूर्योदय	05:40:17
17:41:54	सूर्यास्त	18:12:21
23:46:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:57

विंशोत्तरी बुध 3वर्ष 7मा 1दि	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी चन्द्र 8वर्ष 11मा 17दि
सूर्य	11:59:22	सिंह	लग्न	वृश्चि	11:39:41	राहु
04/05/2024	14:57:17	कन्या	सूर्य	सिंह	19:24:25	24/08/2011
04/05/2030	27:11:10	मीन	चंद्र	मक	11:22:50	24/08/2029
सूर्य 21/08/2024	09:29:10	तुला	मंगल	तुला	05:31:30	राहु 06/05/2014
चन्द्र 20/02/2025	07:20:16	तुला	बुध	कन्या	16:07:30	गुरु 29/09/2016
मंगल 28/06/2025	27:42:26	कन्या	गुरु	वृश्चि	13:29:54	शनि 06/08/2019
राहु 23/05/2026	18:50:10	सिंह	शुक्र	सिंह	23:51:15	बुध 22/02/2022
गुरु 11/03/2027	00:25:53	कुंभ व	शनि व	कुंभ	28:10:49	केतु 13/03/2023
शनि 21/02/2028	10:35:08	वृश्चि व	राहु व	तुला	03:34:41	शुक्र 12/03/2026
बुध 27/12/2028	10:35:08	वृष व	केतु व	मेष	03:34:41	सूर्य 04/02/2027
केतु 04/05/2029	24:27:44	धनु	हर्ष व	मक	03:05:45	चन्द्र 05/08/2028
शुक्र 04/05/2030	24:36:11	धनु	नेप व	धनु	29:11:46	मंगल 24/08/2029
	29:55:30	तुला	प्लूटो	वृश्चि	04:14:48	

लग्न-चलित

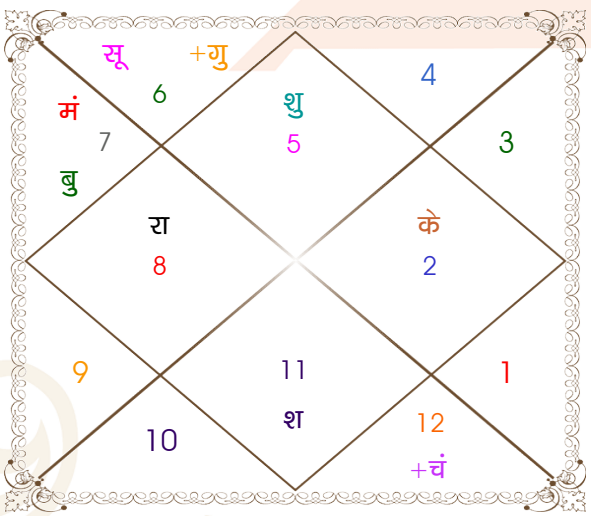

लग्न-चलित

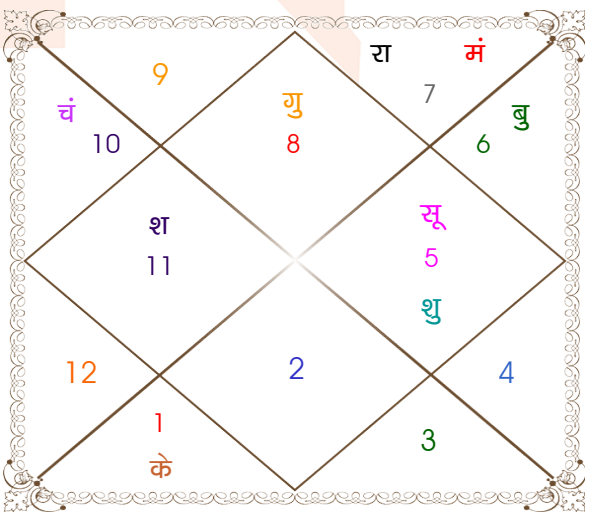

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शनि	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.50		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ँदकममच का नक्षत्र रेवती है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ।ंदीं का नक्षत्र श्रवण है।

ँदकममच का वर्ग सिंह है तथा ।ंदीं का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ँदकममच और ।ंदीं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

ँदकममच मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

।ंदीं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ।ंदीं कि कुण्डली में द्वादश भाव में तुला राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ।ंदीं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ैदकममच कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ैदकममच तथा ।ंदीं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।